हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.एच.डी.)

03465

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2009

एम.एच.डी.-15 : हिन्दी उपन्यास-2

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रथम प्रश्न **अनिवार्य** है। शेष प्रश्नों में से **किन्हीं तीन** के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं ***दो*** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : **10x2=20**

(a) सब शासन व्यवस्थाओं की नींव सामयिक भूमि व्यवस्था पर ही होती है। किसानों की ओर से सरकार पर आते संकट को टालने का फिलहाल यही उपाय हो सकता है कि वे अपनी समस्या साम्प्रदायिक झगड़ों में भूले रहें। यदि लीग और कांग्रेस आपस में नहीं लड़ेंगे तो अब सरकार के लिये इनमें से किसी एक को भी दबाना सम्भव नहीं रहा है। जेकिन्स तो कैबिनेट मिशन को यह दिखा देना चाहता है कि हिन्दुस्तानियों को शासन का अधिकार सौंपना व्यावहारिक नहीं है। अगर यह योजना सफल हो जाये तो अंग्रेज गवर्नर की जरूरत ही नहीं रह जायेगी।

(b) ''जट्ट को पहन पचर पोशाक क्या कहें। आख्यान है न-चिट्टा कपड़ा और कुक्कड़ खाना, उस जट्ट का नहीं ठिकाना।''

मौलादाद जी बोले ''अपनी-अपनी कार और अपने-अपने साज-सिंगार! फसलों की रंगत-रूप हत्थ की मेहनत से, अल्लाह तआला की बरकत से! यह तो ठीक है, महीन कप्पड़ और मुर्ग-पुलाव से खेती की वाही-त्राही नहीं होती।''

शाह जी ने बात उठा ली- ''मौलादाद जी, बड़ी सयानफ की बात की है आपने। मनुक्ख बच्चा बनकर धरती का ओढ़न न पकड़े तो धरती माँ क्यों दूध पिलाने लगी! अपने वेद-शास्त्र भी यही कहते हैं कि धरती माँ को आदर-प्यार से सींचा-सराहा न जाए तो माँ के थनों की तरह धरती के सुंब भी पूरी नहीं खुलते। जो सुंब न खूलें तो दूध की धाराएँ तो आप ही रुक गईं।''

(c) प्रेम के विषय में बात करते समय वे कभी-कभी कहावतों को अजब रूप में पेश किया करते थे और उनमें से न जाने क्यों एक कहावत अभी तक मेरे दिमाग़ में चस्पाँ हैं, हालाँकि उसका सही मतलब न मैं तब समझा था न अब! अकसर प्रेम के विषय में अपने कड़वे-मीठे अनुभवों से हम लोगों का ज्ञानवर्धन करने के बाद खरबूज़ा काटते हुए कहते थे, ''प्यारे बन्धुओं ! कहावत में चाहे जो कुछ हो, प्रेम में खरबूजा चाहे चाकू पर गिरे चाहे चाकू खरबूज़े पर, नुकसान हमेशा चाकू का होता है। अत: जिसका व्यक्तित्व चाकू की तरह तेज़ और पैना हो, उसे हर हालत में इस उलझन से बचना चाहिए''। ऐसी अन्य कहावतें थीं जो याद आने पर बाद में लिखूँगा।

(d) शिक्षा के मैदान में भभ्भड़ मचा हुआ था। अब कोई यह प्रचार करता हुआ नहीं दीख पड़ता था कि अनपढ़ आदमी जानवर की तरह है। बल्कि दबी जबान से यह कहा जाने लगा था कि ऊँची तालीम उन्हीं को लेनी चाहिए जो उसके लायक हो, इसके लिए 'स्क्रिनिंग' होनी चाहिए। इस तरह से घुमा-फिराकर इन देहाती लड़को को फिर से हल की मूठ पकड़ाकर खेत में छोड़ देने की राय दी जा रही थी। पर हर साल फेल होकर, दर्जे में सब तरह की डाँट-फटकार झेलकर और खेती की महिमा पर नेताओं के निर्झरपंथी व्याख्यान सुनकर भी वे लड़के हल और कुदाल की दुनिया में वापस जाने को तैयार न थे। वे कनखजूरे की तरह स्कूल से चिपके हुए थे और किसी भी कीमत पर उससे चिपके रहना चाहते थे।

2. विभाजन संबंधी अन्य उपन्यासों की चर्चा करते हुए उनमें 'झूठा सच' का महत्व प्रतिपादित कीजिए। **10**

3. 'जिन्दगीनामा' के कथा-शिल्प का विश्लेषण कीजिए। **10**

4. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' के आधार पर धर्मवीर भारती की जीवन-दृष्टी का विवेचन कीजिए। **10**

5. 'रागदरबारी' की अंतर्वस्तु पर प्रकाश डालिए। **10**

6. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणी लिखिए : **5x2=10**
   (a) 'वैद्य जी' का चरित्र
   (b) 'झूठा सच' में जनजीवन का अंकन
   (c) 'ज़िन्दगीनामा' में अविभाजित पंजाब की सांझी जनसंस्कृति का आख्यान
   (d) 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' का शिल्प विधान

- o O o -